अनुमोदित
2018-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम (एक वर्षीय)

विषय – लोक–संगीत

सत्र - 2018-19

संकाय – ललित कला

(नियम, परीक्षा योजना, अंक योजना एवं पाठ्यक्रम)

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
लोक–संगीत

संगीत विभाग

उद्देश्यः–

- विद्यार्थी संगीत, गायन एवं वादन के मूल तत्वों को समझ सकेंगे जो भारत की पारंपरिक शैली से ही निकलते है।
- लोक संगीत की विभिन्न विधाओं जैसे लोक गायन, लोक वादन, परंपरायें, शैलियों, इत्यादि से संगीत में आए हुए विभिन्न सैद्धान्तिक एवं वैचारिक अधिष्ठानों पर चिंतन कर उन विधाओं का कक्षा में अध्ययन, प्रदर्शन के तरीकों, प्रक्रियाओं तथा अध्यापन कला को स्थापित कर सकेंगे।
- संगीत परंपराओं में निहित विभिन्न अभ्यासों को क्रियान्वित करने की योग्यता विकसित कर सकेंगे।
- संगीत की सैद्वांतिक समझ और व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रदर्शन, नियोजन तथा आजीविका को प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी समझ सकेंगे कि लोक संगीत शिक्षण प्रक्रिया अन्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की भॉति उसके अभ्यास तत्व, दक्षता संवर्धन, अध्यापन कला के साथ – साथ आयमूलक पृष्ठभूमि में भी अर्थपूर्ण है।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
विषय – लोक–संगीत
अकादमिक सत्र 2018 से 2019

परीक्षा योजना – प्रश्न पत्रों के लिए निर्देशः समय – 3 घंटे

(अ) 1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 10 (बहु वैकल्पीय उत्तर) — अंक निर्धारण – 10, प्रत्येक – 01 अंक

नोट – वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

2. लघुउत्तरीय प्रश्न – 05 — अंक निर्धारण – 15, प्रत्येक – 03 अंक

नोट – प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – 05 (आंतरिक विकल्प के साथ) — अंक निर्धारण – 45, प्रत्येक – 09 अंक

नोट – प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चयन किये जायेंगे।

अधिन्यास/ (एसाइन्मेंट) कार्य — अंक – 30

प्रायोगिक परीक्षा के अंक (प्रति एक) :–

पूर्णांक 100

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
लोक–संगीत

प्रथम प्रश्नपत्र – भारतीय लोक संगीत का इतिहास एवं लोक त्यौहार (सैद्धांतिक)

अधिकतम अंक – 100

उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. संगीत की उत्पत्ति के विषय में वैज्ञानिक तथ्यों को प्रकाश में लाने हेतु।
2. लोक संस्कृति के विषय में छात्रों को जागरुक करने हेतु।
3. म.प्र. के विभिन्न अंचलों को संस्कृति से परिचय कराने हेतु।

उद्देश्य :–

1. भारतीय संगीत के इतिहास से परिचित कराना।
2. लोक संस्कृति एवं संगीत का सामंजस्य।
3. लोक परंपराओं से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम

सैद्धांतिक–1

इकाई 1 – (अ) संगीत की उत्पत्ति – विभिन्न मत
(ब) लोकगीतों में गाथाएँ

इकाई 2 – (अ) लोक संगीत का अर्थ एवं परिभाषा
(ब) लोकगीतों में तीज त्यौहार

इकाई 3 – (अ) सोलह संस्कारों में गाए जाने वाले गीत
(ब) लोक वाद्ययों का प्रयोग

इकाई 4 – (अ) लोक संगीत एवं संस्कृति
(ब) लोक नृत्यों का संक्षिप्त परिचय

इकाई 5– (अ) मध्यप्रदेश की प्रमुख लोक भाषाओं का सामान्य परिचयः–
(ब) बुंदेलखण्डी, मालवी, निमाड़ी, बघेलखण्डी लोकगीतों का परिचय

महत्व :–

1. लोक संगीत का संपूर्ण जीवन में विद्यमान होना।
2. लोक संगीत के माध्यम से जीवन की सरसता।
3. ध्यान एवं एकाग्रता हेतु लोक संगीत का महत्व।

पाठ्यपुस्तक :–

01. संगीत विशारद – बसंत, प्रकाशन – संगीत कार्यालय, हाथरस।
02. उत्तर भारत की लोक संगीत परंपरायें – मो. शरीफ, हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
03. म.प्र. के लोक गीत – कपिल तिवारी आदिवासी लोककला परिषद भोपाल।
04. बुंदेलखंडी लोक गीतों में सांगीतिक तत्व।
05. भारतीय लोक संगीत – संरक्षण, संवर्धन एवं संभावनाएं।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम

(एक वर्षीय)

लोक–संगीत

द्वितीय प्रश्नपत्र – भारतीय प्रांतीय लोक संगीत एवं लोकवाद्य (सैद्धांतिक)

अधिकतम अंक – 100

उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :–

1. म.प्र. को विभिन्न लोक शैलियों के परिचय हेतु।
2. संस्कारों एवं लोक संगीत के विषय में जागरूकता हेतु।
3. लोक वाद्य यंत्रों के परिचय हेतु।

उद्देश्य :–

1. लोकसंगीत की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।
2. लोकसंगीत के मूल तत्वों की पहचान करना।
3. पारंपरिक लोक संगीत के प्रशिक्षण में पूर्णता लाना।

पाठ्यक्रम

सैद्धांतिक–2

इकाई 1 – (अ) लोक वाद्यों का सामान्य परिचय

(ब) विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित लोक वाद्य

इकाई 2 – (अ) मध्यप्रदेश का लोक संगीत

(ब) मध्यप्रदेश के लोकगीतों में प्रयुक्त तालों का अध्ययन

इकाई 3 – (अ) राजस्थान एवं महाराष्ट्र का लोकसंगीत

(ब) राजस्थान एवं महाराष्ट्र के लोकगीतों में प्रयुक्त तालों का अध्ययन

इकाई 4 – (अ) बंगाल एवं आसामीय लोकसंगीत

(ब) बंगाल एवं आसामीय लोकसंगीत में प्रयुक्त तालों का अध्ययन

इकाई 5 – (अ) लोकसंगीत का व्यवसायीकरण

(ब) हिंदी चित्रपट संगीत में लोकसंगीत का प्रयोग

महत्व :–

1. लोक संगीत के माध्यम से जीवन की सरसता।
2. नई पीढ़ी में लोक संस्कृति को प्रसारित करने का माध्यम।
3. आधुनिक संगीत में लोक संगीत के तत्वों की पहचान।

पाठ्यपुस्तक :–

01. संगीत विशारद – बसंत, प्रकाशन – संगीत कार्यालय, हाथरस।
02. उत्तर भारत की लोक संगीत परंपरायें – मो. शरीफ, हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
03. म.प्र. के लोक गीत – कपिल तिवारी आदिवासी लोककला परिषद भोपाल।
04. बुंदेलखंडी लोक गीतों में सांगीतिक तत्व।
05. भारतीय लोक संगीत – संरक्षण, संवर्धन एवं संभावनाएं।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
लोक–संगीत
प्रायोगिक–1

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता –

1. गायन हेतु गला सुरीला बनाने हेतु अभ्यास।
2. शब्दों का सही उच्चारण हेतु।
3. परंपराओं के निर्वहन हेतु (आरती गायन, आदि)

उद्देश्य –

1. लोक संगीत गायन में स्वरों की परिपक्वता।
2. लोक संगीत गायन में, बोलियों के सही उच्चारण की आवश्यकता
3. तालों से परिचित कराना।

प्रायोगिक–1

नोट – भातखण्डे स्वरलिपि का सामान्य ज्ञान

- प्रारंभिक 10 अलंकारों का अभ्यास एवं प्रदर्शन–(आरोह–अवरोह / स्वर अभ्यास)
- दस थाटों का अभ्यास (विलावल, कल्याण, खमाज, काफी, भैरव, पूर्वी मारवा, तौड़ी, आसावरी, भैरवी)
- विभिन्न लोक शैलियों का गायन एवं उच्चारण
- आरती गायन (हारमोनियम के साथ)
- तालों का परिचय एवं ढौलक पर उन्हें प्रदर्शित करना

महत्व –

1. शुद्ध स्वरूप में लोक संगीत का प्रसार।
2. ध्यान एवं एकाग्रता हेतु लोक संगीत का महत्व।

पाठ्यपुस्तक :–

01. क्रमिक पुस्तक मलिका – पंडित विष्णुनारायण भातखंडे भाग–1 एवं भाग–/
02. आरती संग्रह एवं सी.डी.
03. ताल परिचय – डॉ.हरिशचन्द्र श्रीवास्तव

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

पत्रोपाधि पाठ्यक्रम
(एक वर्षीय)
लोक–संगीत
प्रायोगिक–2
(मंच प्रदर्शन)

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता –

1. विभिन्न कथाओं एवं गाथाओं से परिचित कराने हेतु।
2. तीज त्यौहारों से परिचित कराने हेतु।
3. लोक परंपराओं के परिचय हेतु।

उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों को लोक संस्कृति में निहित कथाओं एवं गाथाओं से परिचित कराना एवं प्रसारित करना।
2. विभिन्न त्यौहारों या अन्य अवसरों पर अपनी संस्कृति के अनुरूप व्यवहार करना।
3. लोक परंपराओं के गीतों को जन–जन तक पंहुचाना।

प्रायोगिक–2

1. अपने पसंद के किसी एक लोकगीत का गायन–प्रदर्शन।
2. बाह्य परीक्षक की पसंद से लोकगीत का गायन–प्रदर्शन एवं मौखिकी।

महत्व –

1. जीवन पथ पर, गीतों द्वारा वर्णित दर्शन का महत्व।
2. संस्कृति द्वारा, स्वयं के विकास में योगदान का महत्व।

पाठ्यपुस्तक :–

01. क्रमिक पुस्तक मलिका – पंडित विष्णुनारायण भातखंडे भाग–1 एवं भाग–/
02. मध्यप्रदेश के लोकगीत – कपिल तिवारी – आदिवासी लोककला परिषद भोपाल
03. बुंदेलखण्डी लोकगीतों में सांगीतिक तत्व –